सेवा केंद्र की अवधारणा एवं विकास तथा भागलपुर में प्रभावशीलता

मनमोहन कुमार
शोध छात्र
पंजीयन संख्याः 7656 / 2019
स्नातकोत्तर भूगोल विभाग
ति.मां.भा.वि. वि.भागलपुर

डॉ0 अनिरूद्ध कुमार
विभागाध्यक्ष
विश्वविद्यालय भूगोल विभाग
ति.मां.भा.वि. वि.भागलपुर

सारांशः

सेवा केंद्रों की अवधारणा भारत के प्रशासनिक, सामाजिक तथा आर्थिक ढांचे में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ये केंद्र किसी क्षेत्र विशेष के लिए सुविधाओं और संसाधनों के वितरण का मूल केंद्र होते हैं, जहाँ से आसपास के क्षेत्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है। सेवा

केंद्र केवल भौगोलिक दृष्टि से नहीं, बल्कि कार्यात्मक दृष्टि से भी अत्यंत प्रभावशाली होते हैं। इनकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य जनता को निकटतम स्थान पर आवश्यक सेवाएं सुलभ कराना तथा क्षेत्रीय विकास में संतुलन स्थापित करना है।सेवा केंद्रों के विकास की प्रक्रिया समय के साथ विभिन्न चरणों में विकसित होती रही है। प्रारंभ में ये केवल प्रशासनिक इकाइयाँ थीं, किन्तु धीरे–धीरे इनका स्वरूप बहुआयामी होता गया। शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, संचार, बैंकिंग, कृषि परामर्श, स्वच्छता, पेयजल, सामाजिक सुरक्षा तथा डिजिटल सेवाएं जैसे अनेक कार्य इन केंद्रों से संचालित होने लगे हैं। विशेष रूप से ग्रामीण भारत में सेवा केंद्रों ने विकास के एक सेतु के रूप में कार्य किया है, जिससे वहां की जनसंख्या को नगरीय सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकीं।सेवा केंद्रों के विकास का आकलन करते समय कार्यात्मक सूचकांक, जनसंख्या सूचकांक तथा केंद्रीयता सूचकांक जैसे मापदंडों का प्रयोग किया जाता है। इन मानकों के आधार पर यह ज्ञात किया जाता है कि कोई सेवा केंद्र अपने प्रभाव क्षेत्र में कितनी सेवाएं और कितनी जनसंख्या को प्रभावित कर रहा है।

अतः यह शोध आलेख सेवा केंद्रों की अवधारणा, विकास प्रक्रिया, उनके कार्यात्मक महत्व, प्रशासनिक उपयोगिता एवं सामाजिक प्रभाव का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है। यह न

केवल ग्रामीण नियोजन व नीति–निर्माण में उपयोगी है, बल्कि समावेशी एवं संतुलित विकास की दिशा में एक निर्णायक प्रयास भी है।

मूल शब्द (keywords) : स्वच्छ भारत मिशन, ग्रामीण विकास, सेवा वितरण प्रणाली, बुनियादी संरचना, सामाजिक कल्याण, नारी गरिमा केंद्र, सामुदायिक शौचालय, स्थानीय शासन इकाई, जन भागीदारी, शौचमुक्त ग्राम/शहर

साहित्य समीक्षा :

ग्रामीण योजना एवं सेवा केंद्रों से संबंधित साहित्य का अवलोकन करते हुए यह स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में व्यापक शोध और अवधारणात्मक विकास हुआ है। आर.पी. मिश्रा (1971)की कृति ''Regional Planning: Concepts, Techniques and Policies'' क्षेत्रीय योजना के मूलभूत सिद्धांतों, तकनीकों और नीतियों को प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक योजना निर्माण में स्थानिक असमानताओं को कम करने हेतु सेवा केंद्रों की अवधारणा को सैद्धांतिक आधार देती है।राय और पाटिल (1977) ने अपने शोध पत्र ''Identification of Service Centres in Rural India'' में भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा केंद्रों की पहचान की तकनीकी पद्धति पर प्रकाश डाला है। यह अध्ययन स्थानिक विश्लेषण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी संदर्भ मेंबुननग (1970) द्वारा लिखित लेख 'Service Centres and Rural Development in India'' ग्रामीण विकास में सेवा केंद्रों की भूमिका को दर्शाता है, जो सेवा वितरण और क्षेत्रीय विकास के अंतर्संबंध को स्पष्ट करता है।कायस्थ और मिश्रा (1981) की पुस्तक''ग्रामीण सेवा केंद्रों के प्रकार्यीय विश्लेषण एवं विकास क्रम ''ग्रामीण सेवा केंद्रों के कार्यों, उनके विकास क्रम और सामाजिक–आर्थिक प्रभावों की विवेचना करती है। यह कृति क्षेत्रीय नियोजन के व्यावहारिक पक्ष को उजागर करती है। इसी विषयवस्तु पर आधारित अन्य सन्दर्भों (वही) से यह स्पष्ट होता है कि लेखकों ने ग्रामीण योजना के स्वरूप को समग्र दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। पी. मिश्रा (2012) की पुस्तक ''ग्रामीण योजना एवं विकास'' में समकालीन ग्रामीण योजना की प्रवृत्तियों, चुनौतियों और नीतियों का विश्लेषण है। यह पुस्तक शोधार्थियों व नीति–निर्माताओं के लिए अत्यंत उपयोगी है।

संपूर्णतः, ये सभी ग्रंथ ग्रामीण योजना, सेवा केंद्रों की अवधारणा तथा व्यावहारिक अनुप्रयोगों को समझने हेतु समृद्ध व बहुआयामी दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

शोध आलेख का उद्देश्य :

इस शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य सेवा केंद्र की अवधारणा, विकास एवं उसके कार्यप्रणाली की समग्र समझ प्रस्तुत करना है, विशेषकर भागलपुर जिले के संदर्भ में। सेवा केंद्र, जो कि नागरिकों को विभिन्न सरकारी सेवाएं सरल, पारदर्शी एवं सुलभ तरीके से प्रदान करने हेतु स्थापित किए गए हैं, उनके प्रभावशीलता का मूल्यांकन इस अध्ययन का प्रमुख लक्ष्य है। शोध का उद्देश्य यह जानना है कि सेवा केंद्र किस प्रकार से ई–गवर्नेंस को सशक्त बना रहे हैं तथा आम नागरिकों विशेषकर ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को लाभ पहुँचा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, भागलपुर जिले में सेवा केंद्रों की कार्यकुशलता, चुनौतियाँ एवं नागरिकों की संतुष्टि का विश्लेषण कर उनके सुधार हेतु सुझाव देना भी इस अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। यह शोध आलेख नीति–निर्माताओं और प्रशासन के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

डेटाबेस एवं कार्यप्रणाली :

इस शोध आलेख की कार्यप्रणाली वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक स्वरूप की है, जिसमें सेवा केंद्रों की अवधारणा, विकास एवं भागलपुर जिले में उनकी प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है। शोध हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से सूचनाएँ संकलित की गई हैं। प्राथमिक डाटा भागलपुर जिले के चयनित सेवा केंद्रों पर कार्यरत कर्मियों, सेवा प्राप्त करने वाले नागरिकों तथा संबंधित अधिकारियों से साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त किया गया। वहीं द्वितीयक स्रोतों में सरकारी दस्तावेज, शोध पत्र, रिपोर्ट्स, वेबसाइटें एवं समाचार पत्रों का अध्ययन किया गया जिससे सेवा केंद्रों की कार्यप्रणाली, चुनौतियाँ एवं नागरिक संतुष्टि के स्तर का आकलन किया जा सके। इस पद्धति से शोध को व्यवहारिकता एवं वस्तुनिष्ठता प्राप्त हुई है।

प्रस्तावनाः

समाज के समुचित विकास एवं सुदृढ़ प्रशासनिक संरचना हेतु सेवा केंद्रों की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। सेवा केंद्र न केवल भौगोलिक रूप से किसी क्षेत्र की केंद्रीय इकाई होते हैं, बल्कि ये आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य, प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र बिंदु भी होते हैं। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में सेवा केंद्रों का विकास एक आवश्यक आवश्यकता बन गया है, जिससे जनता को सुविधाएं सुलभ, सम्यक् एवं प्रभावी रूप में उपलब्ध कराई जा सकें।सेवा केंद्रों की अवधारणा मुख्यतः ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच की खाई को पाटने तथा सुलभ जनसेवा प्रदान करने की भावना से जुड़ी है। इन केंद्रों के माध्यम से सरकार की योजनाएं, प्रशासनिक सेवाएं, स्वास्थ्य सेवाएं, स्वच्छता, शिक्षा, कृषि संबंधी तकनीकी सहायता, बैंकिंग और डिजिटल सुविधाएं जनसामान्य तक पहुँचती हैं। विशेष रूप से पंचायती राज प्रणाली के तहत ग्राम स्तरीय सेवा केंद्रों की भूमिका अत्यंत निर्णायक रही है, जिससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया के विकेंद्रीकरण को बल मिला है।सेवा केंद्रों का विकास अनेक कारकों पर निर्भर करता है, जैसे दृ भौगोलिक स्थिति, जनसंख्या घनत्व, यातायात सुविधा, प्रशासनिक प्राथमिकता, संसाधनों की उपलब्धता, आर्थिक क्रियाकलापों की तीव्रता एवं जनजागरूकता। इनके विकास से क्षेत्रीय असंतुलन को कम करने, शहरीकरण के दबाव को नियंत्रित करने तथा ग्रामीण क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण परिणाम देखने को मिले हैं।

इस शोध लेख का उद्देश्य सेवा केंद्रों की मूल अवधारणा, उनके विकास को प्रभावित करने वाले कारकों, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता तथा सामाजिक–आर्थिक योगदान का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन सेवा केंद्रों के माध्यम से देश के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे विकासात्मक परिवर्तन को समझने का एक सशक्त माध्यम प्रस्तुत करेगा।

सेवा केंद्र अपनी कार्यात्मक विशेषताओं के आधार पर मूल्यांकित किए जाते हैं और ये अपने परिसर में निवासियों को अनेक प्रकार की सेवाएं प्रदान करते हैं। इनका प्रभाव क्षेत्र केंद्र की सेवा गुणवत्ता और आकार पर निर्भर करता है। ये केंद्र शहरी नवाचारों को ग्रामीण व दूरदराज

क्षेत्रों तक पहुंचाने में मदद करते हैं, जिससे क्षेत्रीय असमानता कम होती है और विकास को गति मिलती है। ये केंद्र प्रायः ग्रामीण हाट, बाजार या कस्बों के रूप में होते हैं, जहां लोग आवश्यक वस्तुएं और सेवाएं प्राप्त करते हैं। साथ ही, ये सामाजिक, आर्थिक विचारों और तकनीक नवाचारों के प्रचार में भी सहायक होते हैं।[1] योजनाकारों द्वारा इन केंद्रों को विभिन्न स्तरों पर विकसित कर ग्रामीण विकास को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस प्रकार, सेवा केंद्र सतत और समावेशी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

केंद्रीय स्थल की अवधारणा का प्रारंभिक उल्लेख 1931 में मार्क जेफरसन ने किया था, लेकिन इसे एक सैद्धांतिक रूप 1933 में वाल्टर क्रिस्टलर द्वारा उनके केंद्रीय स्थल सिद्धांत के माध्यम से प्रदान किया गया।[2] इसके पश्चात फ्रैंकोइसपेरॉक्स ने विकास ध्रुव सिद्धांत को प्रस्तुत किया, जिसके अनुसार विकास सभी स्थानों पर एकसमान नहीं होता, बल्कि यह कुछ विशेष केंद्रों से आरंभ होकर विभिन्न साधनों द्वारा व्यापक क्षेत्र में फैलता है। बौडविल ने इस सिद्धांत को स्थानिक दृष्टिकोण प्रदान किया और विकास ध्रुव को मानव गतिविधियों के केंद्रीकरण के रूप में देखा। प्रो. आर. पी. मिश्रा ने इस अवधारणा को व्यवहार में लाने हेतु तीन मुख्य कार्यात्मक आवश्यकताओं पर बल दियाकृ सेवा केंद्र के रूप में कार्य करना, विकास के लिए उत्प्रेरक की भूमिका निभाना और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना। विद्वानों ने विकास ध्रुव को पाँच स्तरों में विभाजित किया हैः विकास ध्रुव, विकास केंद्र, विकास बिंदु, सेवा केंद्र और सेवा कोशिका। इनमें सेवा केंद्र और सेवा कोशिका को ग्रामीण विकास की मूलभूत इकाइयाँ माना जाता है।[3] सेवा केंद्र की केंद्रीयता का आशय उस स्थल पर उपलब्ध सेवाओं की मात्रा और गुणवत्ता से होता है। हर अधिवास में ये सेवाएं न तो समान होती हैं और न ही उनकी प्रकृति एक जैसी होती है। इसलिए, किसी सेवा केंद्र की केंद्रीयता उसके तुलनात्मक महत्व और प्रभावशीलता को दर्शाती है। जब किसी केंद्र पर सेवाओं का स्तर अधिक होता है, तो उसकी केंद्रीयता भी बढ़ जाती है। आमतौर पर, जनसंख्या वृद्धि के साथ सेवा मांगों में इजाफा होता है, जिससे सेवा केंद्र का प्रभाव और आकर्षण क्षेत्र भी विस्तृत होता है। इस प्रकार, केंद्रीयता न केवल सेवा वितरण की दक्षता को प्रभावित करती है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक संरचना के संत ुलन में भी योगदान देती है। सेवा केंद्रों की पदानुक्रमिक संरचना का तात्पर्य उनके कार्यक्षेत्र, सेवाओं की विविधता, और कार्यात्मक महत्त्व के आधार पर उनकी श्रेणी निर्धारण से है। इस अवधारणा को विस्तार देने में प्रेस (1955) और बौडविल (1961) जैसे विद्वानों का विशेष योगदान रहा है। उच्च स्तरीय सेवाएं प्रदान करने वाले केंद्र ऊपरी क्रम में रखे जाते हैं, जबकि साधारण सेवाएं देने वाले केंद्र निचले स्तर पर स्थित होते हैं। किसी सेवा केंद्र की पदानुक्रम स्थिति दो मुख्य आधारों पर निर्धारित होती है – उस क्षेत्र की जनसंख्या और वहां उपलब्ध सेवाओं की श्रेणी व स्तर। इसके अतिरिक्त, सेवा केंद्रों का स्थानिक संगठन किसी भी

क्षेत्र के आर्थिक विकास की दिशा और गति को दर्शाता ही नहीं, बल्कि उसे प्रभावित भी करता है।[4] उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों के विकास विश्लेषण में यह संरचना एक अहम भूमिका निभाती है। सेवा केंद्रों

के वितरण पर भौगोलिक बनावट, सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियां और सांस्कृतिक कारकों का सीधा प्रभाव पड़ता है। सैद्धांतिक रूप से देखा जाए, तो यदि कोई क्षेत्रभौगोलिक दृष्टि से समरूप हो और सामाजिक–आर्थिक क्रियाएं समान रूप से फैली हों, तो वहां सेवा केंद्रों का वितरण संतुलित और नियमित होता है। सेवा केंद्र आर्थिक विकास में उत्प्रेरक का कार्य करते हैं। जिन क्षेत्रों में ये केंद्र पर्याप्त नहीं होते, वहां विकास की गति धीमी होती है, जबकि सेवा केंद्रों की भरपूर उपस्थिति विकास को तीव्र गति प्रदान करती है।

इस प्रकार, सेवा केंद्रों की केंद्रीयता और पदानुक्रम न केवल सेवा आपूर्ति को व्यवस्थित करते हैं, बल्कि क्षेत्रीय विकास की दिशा तय करने में भी निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

अध्ययन क्षेत्र

भागलपुर जिला बिहार राज्य के दक्षिण–पूर्वी हिस्से में स्थित है। इस जिले के मध्य से होकर पवित्र गंगा नदी प्रवाहित होती है। इसका अक्षांशीय विस्तार 25°07′ उत्तर से 25°30′ उत्तर तक और देशांतर 86°37′ पूर्व से 87°30′ पूर्व तक है। भागलपुर का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2569 वर्ग किलोमीटर है, जो बिहार के कुल क्षेत्रफल का लगभग 2.73% है। इस जिले में कुल 1515 गांव बसे हुए हैं और इसकी औसत ऊंचाई समुद्र तल से लगभग 43 मीटर है। भागलपुर में औसत वार्षिक वर्षा 1203 मिमी होती है। जिले की कुल जनसंख्या 30,03,776 है, और स्त्री–पुरुष अनुपात 880 महिलाएं प्रति 1000 पुरुष है। यहां की जनसंख्या वृद्धि दर दशकीय आधार पर 25.36% है। भागलपुर जिले की सीमाएं इस प्रकार हैं।उत्तरः मधेपुरा, पूर्णिया, और कटिहार दक्षिणः बांका पूर्वः गोड्डा और साहिबगंज पश्चिमः खगड़िया और मुंगेर इस जिले में तीन अनुमंडल हैंः भागलपुर सदर, नवगछिया, और कहलगांव। साथ ही, जिले में कुल 16 प्रखंड शामिल हैं। भागलपुर अपनी भौगोलिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक विविधता के कारण अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसके प्राकृतिक संसाधन और सामाजिक संरचना इसे क्षेत्रीय विकास और नियोजन के संदर्भ में विशिष्ट बनाते हैं।

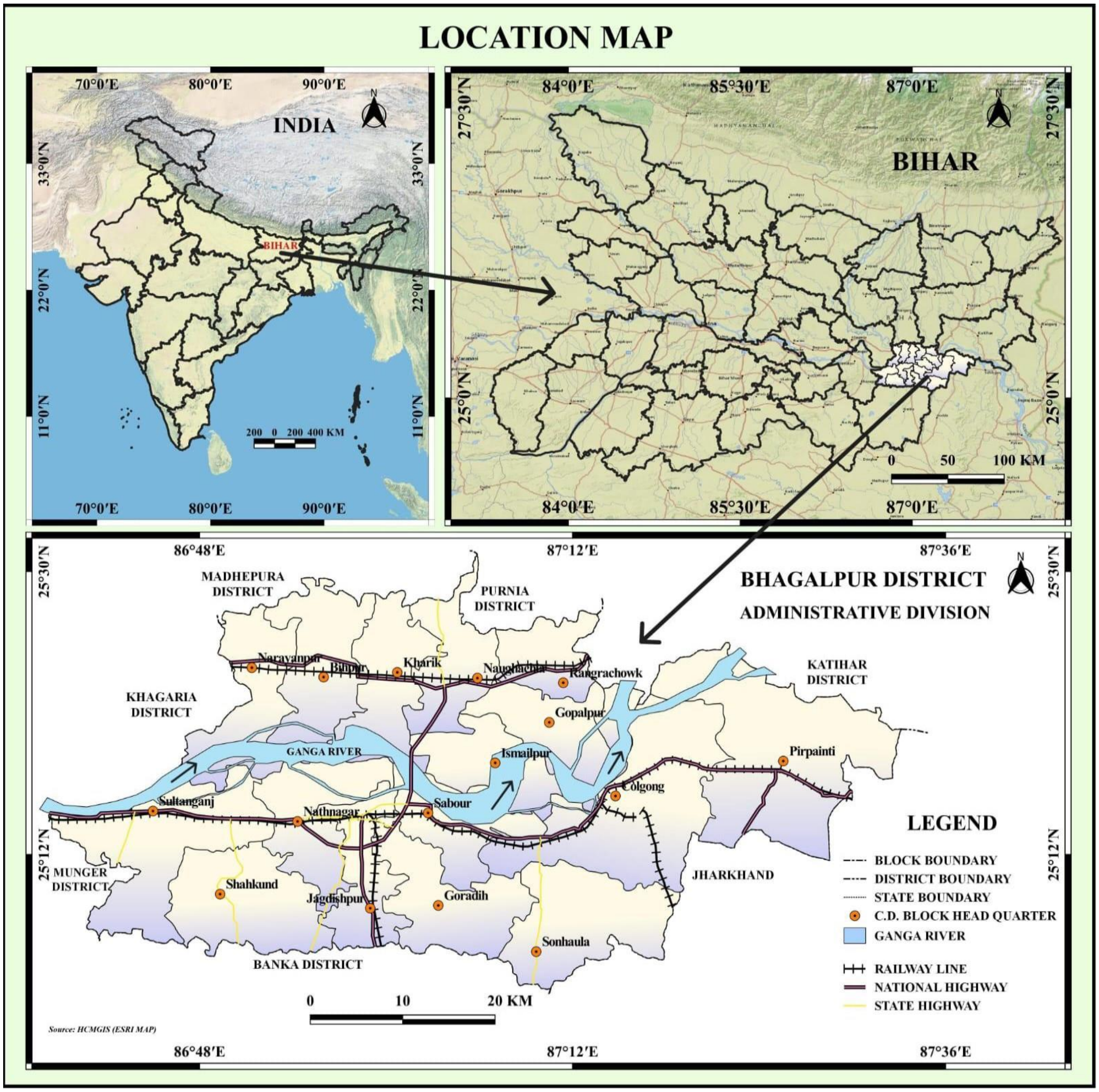
LOCATION MAP
INDIA
BIHAR
70°0′E
80°0′E
90°0′E
33°0′N
22°0′N
11°0′N
200 0 200 400 KM
84°0′E
85°30′E
87°0′E
27°30′N
25°0′N
0 50 100 KM
BHAGALPUR DISTRICT
ADMINISTRATIVE DIVISION
86°48′E
87°12′E
87°36′E
25°30′N
25°12′N
MADHEPURA DISTRICT
PURNIA DISTRICT
KATIHAR DISTRICT
KHAGARIA DISTRICT
MUNGER DISTRICT
BANKA DISTRICT
JHARKHAND
GANGA RIVER
Narayanpur
Bihpur
Kharik
Naugachia
Rangrachowk
Gopalpur
Ismailpur
Pirpainti
Colgong
Sultanganj
Nathnagar
Sabour
Shahkund
Jagdishpur
Goradih
Sonhaula
LEGEND
BLOCK BOUNDARY
DISTRICT BOUNDARY
STATE BOUNDARY
C.D. BLOCK HEAD QUARTER
GANGA RIVER
RAILWAY LINE
NATIONAL HIGHWAY
STATE HIGHWAY
0 10 20 KM
Source: HCMGIS (ESRI MAP)

सेवा केंद्रों और अधिवास केंद्रों की परस्पर भूमिका:

सेवा केंद्र, चाहे वे छोटे हों या बड़े, अपने प्रभाव क्षेत्र की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विविध सेवाएं प्रदान करते हैं। ये केंद्र न केवल आस–पास की आबादी बल्कि दूरवर्ती क्षेत्रों के लिए भी संसाधनों और सुविधाओं का माध्यम बनते हैं। सेवा केंद्र और सेवित क्षेत्र के बीच गहरा पारस्परिक संबंध होता है – जहां एक ओर सेवा केंद्र क्षेत्र से संसाधन प्राप्त करता है, वहीं दूसरी ओर क्षेत्र अपनी सामाजिक–आर्थिक जरूरतों की पूर्ति के लिए सेवा केंद्र पर निर्भर रहता है।[5] इस सहयोगात्मक तंत्र से क्षेत्रीय समृद्धि और विकास की दिशा तय होती है।सेवा क्षेत्र को
प्रभाव क्षेत्र, पूरक क्षेत्र या पृष्ठ प्रदेश जैसे नामों से भी जाना जाता है, जो सेवा केंद्र के साथ उसकी स्थानिक और कार्यात्मक जुड़ाव को दर्शाता है। इस परस्पर निर्भरता का परिणाम

क्षेत्रीय संतुलन और सामाजिक–आर्थिक विकास के रूप में सामने आता है।मानव अधिवास स्थायी सांस्कृतिक भू–दृश्य का प्रतीक हैं, जो जनसंख्या की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृ तिक विशेषताओं से प्रभावित होते हैं। इतिहास में हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल जैसे अधिवास न केवल सभ्यताओं के केंद्र बने, बल्कि उन्होंने व्यापार, विनिमय और उत्पादन की गतिविधियों को भी संगठित किया। वैदिक काल के पश्चात महाजनपदों जैसे मगध, पाटलिपुत्र, उज्जैन आदि ने अधिवास केंद्रों की प्रासंगिकता को और भी विस्तार दिया। समय के साथ ये अधिवास केंद्र हाट, बाजार और सेवा केंद्रों के रूप में विकसित हुए, जिन्होंने न केवल जनसंख्या की जरूरतों को पूरा किया बल्कि क्षेत्रीय विकास को भी गति दी। जहां सेवा केंद्र सुदृढ़ होते हैं, वहां विकास प्रक्रिया तीव्र होती है और असमानता घटती है।[6] शहरी क्षेत्रों के नवाचार और आधुनिक विचार धीरे–धीरे सेवा केंद्रों के माध्यम से गांवों तक पहुंचते हैं, जिससे सामाजिक प्रगति और क्षेत्रीय संतुलन सुदृढ़ होता है।

इस प्रकार, सेवा केंद्रों और अधिवास केंद्रों का परस्पर संबंध केवल कार्यात्मक नहीं, बल्कि क्षेत्रीय विकास की एक आधारशिला भी है।

सेवा केंद्र की अवधारणाः एक नवीन दृष्टिकोण

सेवा केंद्र एक ऐसा अधिवास या बस्ती है, जो अपने प्रभाव क्षेत्र के भीतर निवास करने वाली जनसंख्या की सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विशेष सेवाएं और केंद्रीय कार्य प्रस्तुत करता है। जब कोई स्थान आसपास के क्षेत्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं

को पूरा करता है, तो वहां पर संपन्न कार्यों को केंद्रीय कार्यमाना जाता है, जो उस क्षेत्र के लिए अत्यावश्यक होते हैं और सेवा केंद्र की भूमिका को परिभाषित करते हैं।किसी भी सेवा केंद्र की स्थापना एवं विकास में इन केंद्रीय कार्यों की उपस्थिति अनिवार्य होती है। प्रायः यह केंद्र अपने सेवा क्षेत्र के भौगोलिक मध्य के निकट स्थित होता है, हालांकि इसका वास्तविक स्थान अनेक भौतिक और सामाजिक कारकों से निर्धारित होता है। जैसे भूमि की प्रकृति, ढलान, तापमान, वायुप्रवाह, वर्षा, पेयजल की उपलब्धता, और आर्द्रता, साथ ही साथ आर्थिक गतिविधियों की तीव्रता, बाजार की पहुंच, तथा सांस्कृतिक सामंजस्यता जैसे तत्व इसके विकास को प्रभावित करते हैं। इस संकल्पना का आरंभिक उल्लेख मार्कजेफरसन ने 1931 में किया था, लेकिन इसे सैद्धांतिक रूप और विश्लेषणात्मक संरचना प्रदान करने का श्रेय जर्मनी के विद्वान वाल्टर क्रिस्टलर को जाता है। उन्होंने 1933 में दक्षिणी जर्मनी में किए गए अपने

शोध मेंकेंद्रीय स्थल सिद्धांतको प्रस्तुत किया, जिसे बाद में वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई।[7]

भारतीय संदर्भ में भी केंद्र स्थल सिद्धांत पर व्यापक शोध हुए हैं। एम.बी.आर. शास्त्री, आर.एन. कर, एस. सिंह, जे. सिंह, डी.के. सिंह, शिव बहादुर सिंह और एच.एन. मिश्रा जैसे विद्वानों ने इस सिद्धांत को भारतीय भूगोल और ग्रामीण संरचनाओं के साथ जोड़कर सेवा केंद्र की अवधारणा को और अधिक स्पष्ट किया। इन विद्वानों के कार्यों ने न केवल इस अवधारणा की गहराई को उजागर किया, बल्कि क्षेत्रीय विकास में इसकी उपयोगिता को भी रेखांकित किया।

वाल्टर क्रिस्टलर का केंद्रीय स्थल सिद्धांतः

1931 में मार्कजेफरसन द्वारा ''केंद्र स्थल'' की संकल्पना प्रस्तुत किए जाने के कुछ ही वर्षों बाद, 1933 में जर्मन भूगोलवेत्तावाल्टर क्रिस्टलर ने दक्षिणी जर्मनी में किए गए गहन अध्ययन

के आधार पर केंद्र स्थलों के वितरण और उनके कार्यात्मक स्वरूप पर आधारित एक प्रसिद्ध सिद्धांत प्रस्तुत किया। उन्होंने ''सेवा केंद्र'' के स्थान पर मदजतंसवतज शब्द का प्रयोग किया, जिसका तात्पर्य है ऐसा स्थल जो विशिष्ट सेवाओं के माध्यम से अपने प्रभाव क्षेत्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। क्रिस्टलर ने यह स्थापित किया कि किसी क्षेत्र में केंद्र स्थलों का आकार, उनकी संख या, प्रभाव क्षेत्र और सेवाओं की प्रकृति एक पदानुक्रमिक ढांचे में संगठित होती है। यह पदानुक्रम, सेवा केंद्रों के बीच स्थानिक और कार्यात्मक संबंधों को दर्शाता है, जो क्षेत्रीय संतुलन और संस ाधनों के तर्कसंगत वितरण को दर्शाता है। उनका अध्ययन विभिन्न जनसंख्या आकार वाले क्षेत्रों 800 से लेकर 30 लाख तक में उपलब्ध सेवाओं की विविधता और वितरण पर केंद्रित था।[8] इस सिद्धांत की आधारशिला तीन मूलभूत

मान्यताओं पर रखी गईः

1. संसाधनों की समानतादृ सभी स्थानों पर भौतिक और सामाजिक–आर्थिक संसाधनों का वितरण समान रूप से होता है, जिससे केंद्र स्थलों के विकास में समरूपता बनी रहती है।

2. परिवहन की समान पहुंचदृ परिवहन सुविधाएं हर दिशा में एकसमान रूप से उपलब्ध होती हैं, और दूरी बढ़ने पर परिवहन लागत भी तुलनात्मक रूप से बढ़ती है।

3. वस्तु–विशेष परिवहन व्यय प्रत्येक वस्तु या सेवा के लिए परिवहन व्यय भिन्न होता है, जो उनके वितरण के स्वरूप को प्रभावित करता है।

क्रिस्टलर का यह मॉडल सेवा केंद्रों के स्थानिक संगठन को समझने में एक मील का पत्थर साबित हुआ। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि सामान्य सेवाएं लगभग सभी अधिवासों में मिलती हैं, लेकिन विशेष सेवाएं केवल कुछ केंद्रों तक सीमित रहती हैं, जो उन्हें अन्य क्षेत्रों से अलग बनाती हैं। केवल वे बस्तियां जो अपने प्रभाव और सहायक क्षेत्र के साथ सक्रिय संबंध बनाए रखती हैं, उन्हें हीकेंद्र स्थलकी संज्ञा दी गई। सेवा केंद्र वे होते हैं जो विशिष्ट और आवश्यक सेवाएं प्रदान कर अपने प्रभाव क्षेत्र की जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। इन सेवाओं कोकेंद्रीय कार्यकहा जाता है, और किसी केंद्र का महत्व इन कार्यों की विविधता और जटिलता से निर्धारित होता है। जैसे–जैसे किसी सेवा केंद्र की संरचना विस्तृत

होती है, उसमें उच्च स्तरीय, जटिल सेवाएं शामिल होती जाती हैं और उसका प्रभाव क्षेत्र भी व्यापक होता जाता है। इसके विपरीत, छोटे केंद्र केवल सीमित सेवाएं प्रदान कर पाते हैं और उनका प्रभाव क्षेत्र भी संकुचित होता है।इस सिद्धांत के अनुसार, उच्च श्रेणी के केंद्र न केवल अपने ही क्षेत्र की आवश्यकताएं पूरी करते हैं, बल्कि उनसे छोटे सेवा केंद्रों को भी आवश्यक सेवाएं उपलब्ध कराते हैं। अतः, सेवा केंद्रों का पदानुक्रम जनसंख्या नहीं, बल्कि उनकी सेवाओं और कार्यात्मक क्षमताओं के आधार पर निर्धारित किया जाता है, जो उन्हें सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से विशिष्ट बनाता है।

भारत में सेवा केंद्रों का विकासः

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में सेवा केंद्रों पर शोध और विश्लेषण को विशेष गति मिली। इस क्षेत्र में ओ.पी. सिंह, आर.पी. मिश्रा, एच.एन. मिश्रा, आर.एल. सिंह, के.वी. सुंदरम, और नित्यानंद जैसे प्रमुख भारतीय भूगोलवेत्ताओं ने उल्लेखनीय योगदान दिया। इन विद्वानों ने सेवा केंद्रों के लिए 'केंद्रीय स्थल', 'शहरी बस्ती', 'विकास केंद्र' जैसे विविध शब्दों का प्रयोग करते हुए, भारतीय संदर्भ में इसकी व्यापक व्याख्या प्रस्तुत की।के.वी. सुंदरम के अनुसार, वे अधिवास जो क्षेत्रीय आकर्षण के केंद्र होते हैं और बहुविध सेवाएं प्रदान करते हैं, उन्हें सेवा केंद्र कहा जा सकता है। इसी प्रकार, एस. एन.पी. जयसवाल ने सेवा केंद्रों को ऐसे स्थल बताया जो अपने प्रभाव क्षेत्र में सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों का संचालन करते हैं। एस.सी. बंसल का मत था कि ये केंद्र छोटे गांवों से लेकर महानगरों तक हो सकते हैं, जो अपनी अनुकूल अवस्थिति के कारण अन्य बस्तियों को सेवाएं प्रदान करते हैं। वहीं, आर.बी. मंडल ने सेवा केंद्रों को कृषि के अतिरिक्त स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन, और उद्योग जैसी सुविधाएं प्रदान करने वाले स्थल माना।

इस प्रकार, भारत में सेवा केंद्रों की अवधारणा का विकास न केवल सैद्धांतिक रूप से समृद्ध हुआ, बल्कि इसका क्षेत्रीय नियोजन और संतुलित विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यह अध्ययन और भी संगठित और व्यापक बना, जो आज भी जारी है।

विकास की अवधारणा :

विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जो किसी क्षेत्र या समाज में सेवाओं, जीवन शैली, नवाचार और सामाजिक–आर्थिक व्यवहारों में सकारात्मक और गुणात्मक बदलाव को दर्शाती है। यह सामाजिक समानता को बढ़ावा देता है और भेदभाव को घटाता है। डडलीसियर्स ने ''ग्रोथविदाउटडेवलपमेंट'' के माध्यम से स्पष्ट किया कि आर्थिक वृद्धि मात्र विकास नहीं होती जब तक उसमें सामाजिक प्रगति न हो। विकास से जुड़ी अवधारणाओं में प्रगति और समृद्धि भी शामिल हैंकृजहां प्रगति भूतपूर्व स्थिति की तुलना में वर्तमान में हुए व्यापक बदलाव को दर्शाती है, वहीं समृद्धि मापनीय लाभों पर केंद्रित होती है। वर्तमान में ''सतत विकास'' या ''संविकास'' को सबसे उन्नत अवधारणा माना जाता है, जो पर्यावरण संरक्षण, संसाधनों के न्यायसंगत उपयोग और तकनीकी दक्षता पर बल देती है।[9] इसका उद्देश्य वर्तमान की जरूरतों को इस प्रकार पूरा करना है कि भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताएं भी सुरक्षित रहें। इस प्रकार, विकास, प्रगति और सतत विकास मिलकर सामाजिक न्याय, आर्थिक सुधार और पारिस्थितिक संतुलन की दिशा में एक समग्र और दीर्घकालिक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। सेवा केंद्रों के उत्पत्ति और विकास को प्रभावित करने वाले कारक

सेवा केंद्र वह विकास केंद्र होते हैं जो किसी विशेष क्षेत्र या बस्ती के समीप स्थित होते हैं और न केवल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, बल्कि अपने आसपास के क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों से भी जुड़कर कार्य करते हैं। इन केंद्रों की उत्पत्ति अक्सर एक बस्ती के रूप में होती है, जो समय के साथ अपने कार्यात्मक संबंधों के कारण सेवा केंद्र के रूप में विकसित हो जाती है। सेवा केंद्रों का आकार छोटा, जैसे ग्रामीण केंद्र, या बड़ा, जैसे शहरी महानगर, हो सकता है।सेवा केंद्र का मुख्य कार्य अपने क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक जरूरतों को पूरा करना है, साथ ही खुद की जरूरतें भी पूरी करना है। ग्रामीण सेवा केंद्रों में मुख्यतः कृषि और पशुपालन संबंधित कार्य होते हैं, जबकि शहरी सेवा केंद्रों में अधिक विविधतापूर्ण सेवाएं और आर्थिक क्रियाएंकृजैसे द्वितीयक, तृतीयक और चतुर्थक कार्यकृ प्रदान की जाती हैं। शहरी सेवा केंद्रों का प्रभाव क्षेत्र बड़ा और विस्तृत होता है, और ये अपने

चतुर्दिक क्षेत्र से गहरे सामाजिक और आर्थिक रूप से जुड़े होते हैं, जिससे इनकी उन्नति और विकास में गति आती है।

सेवा केंद्रों का उद्भव और विकास मुख्यतः दो प्रमुख प्रकार के कारकों से प्रभावित होता है मानवीय और भौतिक कारक।

मानवीयकारक

मानवीय कारकों में जनसंख्या का आकार, आर्थिक क्रियाएं, सामाजिक और सांस्कृतिक जरूरतें, परंपराएं और मूल्यों जैसी चीजें शामिल होती हैं। किसी सेवा केंद्र का विकास इस बात पर निर्भर करता है कि उस क्षेत्र में कौन से विशेष कार्य किए जा रहे हैं और किस प्रकार के लोग इन सेव ाओं का उपयोग कर रहे हैं। यदि सेवा केंद्र की सेवाएं विविध प्रकार की हैं, तो उसका प्रभाव क्षेत्र भी विस्तृत होगा और इसे विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक वर्गों द्वारा उपयोग किया जाएगा। उदाहरण स्वरूप, धार्मिक सेवा केंद्र जैसे वैष्णो देवी, अजमेर शरीफ और स्वर्ण मंदिर हैं, जो धार्मिक कार्यों के लिए प्रसिद्ध हैं, जबकि मुंबई, दिल्ली, चेन्नई, और कोलकाता जैसे शहर सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक कार्यों के लिए महत्वपूर्ण सेवा केंद्र के रूप में कार्य करते हैं।

भौतिककारक

मानव बस्ती और सेवा केंद्रों की उत्पत्ति का मुख्य आधार प्राकृतिक और भौतिक कारकों की उपलब्धता है। जब मानव ने जंगलों और गुफाओं में रहना शुरू किया, तो उसने उन स्थानों का चयन किया जहां पानी, उर्वरक मिट्टी और आदर्श जलवायु की उपलब्धता थी। ऐसे स्थानों पर सेवा केंद्रों का विकास हुआ जो नदी किनारे, शुद्ध पानी की उपलब्धता वाले क्षेत्रों और उपजाऊ भूमि पर स्थित थे। अन्य भौतिक कारक जैसे सूर्य की गर्मी, वर्षा, भूमि की ढाल और आद्रता भी महत्वपूर्ण होते हैं। यही कारण है कि उष्ण मरुस्थल, शीत मरुस्थल और पर्वतीय क्षेत्रों में छोटे आकार के सेवा केंद्र विकसित होते हैं, जबकि जलवायु और प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध क्षेत्र बड़े और अधिक विकसित सेवा केंद्रों का निर्माण करते हैं।

इस प्रकार, सेवा केंद्रों के विकास में प्राकृतिक और भौतिक कारकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

सेवा केंद्रों का विकास

सेवा केंद्रों के विकास को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारक हैं, जो उसके आकार, भौगोलिक क्षेत्रफल और प्रदान की जाने वाली सेवाओं की विविधता को निर्धारित करते हैं। मुख्य रूप से,सेवा केंद्रों का विकास चार प्रमुख कारकों पर निर्भर करता है:

1. भौतिक कारक

भौतिक कारक सेवा केंद्रों के भौगोलिक विस्तार को प्रभावित करते हैं। इन कारकों में प्राकृतिक सीमाएं जैसे पर्वत, नदियां, समुद्र और घाटियाँ शामिल हैं, जो किसी सेवा केंद्र के विकास में स्थायी रूप से बाधाएं डाल सकते हैं। उदाहरण के लिए, भारत में शिमला, मसूरी, और नैनीताल जैसे सेवा केंद्र प्राकृतिक भौतिक सीमाओं से प्रभावित हैं और इसलिए इनका विस्तार सीमित होता है।

2. विनिमय प्रक्रिया

विनिमय प्रक्रिया किसी सेवा केंद्र के विकास का सबसे महत्वपूर्ण मानवीय कारक है। यह प्रक्रिया सेवा केंद्र के द्वारा विभिन्न सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी और उनकी विविधता को प्रभावित करती है। यदि सेवा केंद्र में एकतरफा संबंध होते हैं, जैसे सैनिक छावनियों या औद्योगिक केंद्रों में, तो वे सेवा केंद्र के रूप में नहीं विकसित हो पाते। इसके विपरीत, जहां पर विनिमय प्रक्रिया सक्रिय होती है, वहां सेवा केंद्रों का विकास तेजी से होता है।

3. प्रशासनिक क्रियाएं

प्रशासनिक क्रियाएं सेवा केंद्र के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जब प्रशासनिक केंद्र जैसे जिला, विकासखंड या पंचायत स्तर पर स्थापित होते हैं, तो इन केंद्रों के आसपास

अन्य सामाजिक और आर्थिक गतिविधियाँ भी फैलने लगती हैं। यहां पर बेहतर परिवहन, वित्तीय व्यवस्था और अन्य बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता सेवा केंद्रों के विस्तार में मदद करती है।

4. यातायात

सुगम यातायात व्यवस्था और बेहतर परिवहन नेटवर्क किसी सेवा केंद्र के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। परिवहन सुविधाओं की उपलब्धता सेवा केंद्रों को न केवल भौगोलिक रूप से जोड़ती है, बल्कि इसके आसपास के क्षेत्रों की जनसंख्या और कार्यों को भी प्रभावित करती है। जहां परिवहन बेहतर होता है, वहां सेवा केंद्रों का आकार और प्रभाव क्षेत्र अधिक विस्तृत होता है।

इन चार प्रमुख कारकों के माध्यम से सेवा केंद्रों का विकास और विस्तार संभव होता है, जो किसी भी स्थल की सामाजिक और आर्थिक प्रगति में योगदान करते हैं।

भागलपुर जिले के सेवा केंद्रों का केंद्रीयता विश्लेषण:

भागलपुर जिले के सेवा केंद्रों की केंद्रीयता का विश्लेषण उनके कार्यात्मक व जनसंख्या आधारित संकेतकों के आधार पर किया गया है। इस विश्लेषण में प्रत्येक सेवा केंद्र की उपलब्ध सेवाओं की संख्या, कार्यात्मक सांद्रता सूचकांक (FCI), कार्यशील जनसंख्या, सेवित जनसंख्या सूचकांक, केंद्रीयता अंक तथा केंद्रीयता सूचकांक का समावेश किया गया है। केंद्रीयता सूचकांक को सभी केंद्रों के औसत के सापेक्ष (100 को आधार मानते हुए) प्रदर्शित किया गया है।

सेवा केंद्र का नाम	सेवाओं की संख्या	FCI (%)	अनुमानित कार्यात्मक अंक	कार्यशील जनसंख्या	सेवित जनसंख्या सूचकांक (%)	केंद्रीयता अंक	केंद्रीयता सूचकांक (औसत=100)
सबौर	20	11.11	722.0	51,553	4.71	0.52	122.16

रंगरा	25	13.89	902.5	1,03,014	9.41	1.31	305.18
गोराडीह	10	5.56	361.0	52,782	4.82	0.27	62.59
सुलतानगंज	22	12.22	794.2	89,528	8.18	1.00	233.34
कहलगांव	28	15.56	1,010.8	1,31,868	12.05	1.87	437.63
बिहपुर	15	8.33	541.5	44,542	4.07	0.34	79.14
खरीक	12	6.67	433.2	47,976	4.38	0.29	68.25
रंगरा चौंक	10	5.56	361.0	32,593	2.98	0.17	38.65
गोपालपुर	18	10.00	649.8	34,278	3.13	0.31	73.11
सन्हौला	10	5.56	361.0	69,455	6.35	0.35	82.36
जगदीशपुर	2	1.11	72.2	2,06,583	18.87	0.21	48.91
नवगछिया	2	1.11	72.2	55,749	5.09	0.06	13.20
नारायणपुर	1	0.56	36.1	38,519	3.52	0.02	4.60
शाहकुण्ड	2	1.11	72.2	67,896	6.20	0.07	16.07
नाथगगर	2	1.11	72.2	54,616	4.99	0.06	12.93
इस्माईलपुर	1	0.56	36.1	15,682	1.43	0.01	1.87

1. शीर्ष स्तरीय सेवा केंद्रः

क्हलगांव (केंद्रीयता सूचकांकः 437.63) भागलपुर जिले का सबसे प्रभावशाली और उच्च स्तरीय सेवा केंद्र है। इसकी सेवित जनसंख्या (12.05ः) और सेवाओं की विविधता (28 सेवाएं) इसे जिले में केंद्रीय रूप से सर्वोपरि बनाती है।दूसरे स्थान परपीरपैंतीहै जिसका केंद्रीयता सूचकांक 305.18 है। इसकी कार्यशील जनसंख्या अपेक्षाकृत अधिक है तथा सेवाओं की संख्या (25) भी उल्लेखनीय है। सुल्तानगंज (केंद्रीयता सूचकांकः 233.34) तीसरे स्थान पर है, जो अपने धार्मिक महत्व एवं व्यापक जनसंपर्क के कारण भी एक प्रमुख सेवा केंद्र बन चुका है।[10]

2. माध्यमिक श्रेणी के सेवा केंद्रः

सबौर (122.16), सन्हौला (82.36), बिहपुर (79.14), गोपालपुर (73.11), खरीक(68.25) एवंगोराडीह (62.59) जैसे सेवा केंद्र मध्यवर्ती श्रेणी में आते हैं। ये केंद्र अपेक्षाकृत कम जनसंख्या क्षेत्र को सेवाएं प्रदान कर रहे हैं, किंतु इनकी कार्यात्मक विविधता और स्थानीय जुड़ाव इन्हें महत्वपूर्ण बनाती है।

3. निम्न केंद्रीयता वाले सेवा केंद्रः

रंगरा चौक (38.65), शाहकुंड (16.07), नाथनगर (12.93), नवगछिया (13.20), जगदीशपुर (48. 91), नारायणपुर (4.60) तथाइस्माइलपुर (1.87) जैसे केंद्र अपेक्षाकृत सीमित सेवाएं प्रदान करते हैं और इनकी सेवित जनसंख्या का प्रतिशत भी बहुत कम है। विशेष रूप सेइस्माइलपुर, जिसका केंद्रीयता सूचकांक सबसे न्यूनतम है, जिला स्तर पर सेवा प्रभावशीलता की दृष्टि से सबसे पिछड़ा माना जा सकता है।11

इस विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सेवा केंद्रों की केंद्रीयता उनके कार्यात्मक फैलाव और सेवित जनसंख्या पर निर्भर करती है। कहलगांव, रंगरा और सुल्तानगंजजैसे केंद्र जहां बहुआयामी सेवाएं और जनसंपर्क का विस्तार है, वहींइस्माइलपुर, नारायणपुर जैसे क्षेत्र अभी भी सेवा विस्तार की दृष्टि से पिछड़े हुए हैं। इस अध्ययन के आधार पर नीति–निर्माताओं द्वारा सेवा संतुलन की दिशा में ठोस प्रयास किए जा सकते हैं।

निष्कर्षः

सेवा केंद्रों की अवधारणा मूलतः स्थानीय स्तर पर सुविधाओं और संसाधनों को सुलभ कराने हेतु विकसित हुई थी, जो आज के समय में क्षेत्रीय विकास एवं प्रशासनिक दक्षता का एक महत्वपूर्ण आधार बन चुकी है। सेवा केंद्र, जनसंख्या और कार्यात्मक गतिविधियों के घनत्व के अनुसार, स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति में सेतु का कार्य करते हैं। इनकी उपस्थिति न केवल आधारभूत सेवाओं को निकट लाती है, बल्कि क्षेत्रीय असमानताओं को भी कम करती है। भागलपुर जिले के सेवा केंद्रों के केंद्रीयता विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ किकहलगांव,

रंगरा और सुल्तानगंज जैसे केंद्रों का केंद्रीयता सूचकांक अन्य केंद्रों की अपेक्षा कहीं अधिक है। इसका अर्थ है कि ये केंद्र न केवल अधिक सेवाएं प्रदान कर रहे हैं, बल्कि अपेक्षाकृत बड़ी जनसंख्या को भी प्रभावी ढंग से सेवित कर रहे हैं। वहीं इस्माइलपुर जैसे क्षेत्रों में सेवा केंद्र अपेक्षाकृत कमजोर पाए गए, जिससे वहां सेवा वितरण की गति धीमी प्रतीत होती है।सेवा केंद्रों के विकास और कार्यक्षमता में जनसंख्या घनत्व, भौगोलिक स्थिति, आर्थिक गतिविधियों का स्तर तथा प्रशासनिक प्राथमिकताएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भागलपुर में सेवा केंद्रों के तुलनात्मक अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि सेवा केंद्रों के संतुलित वितरण तथा कार्यात्मक उन्नयन की आवश्यकता है, ताकि समग्र विकास सुनिश्चित हो।

अतः कहा जा सकता है कि सेवा केंद्रों की प्रभावशीलता क्षेत्रीय विकास का मुख्य घटक बन चुकी है और भागलपुर जिले में इसकी भूमिका भविष्य में और अधिक महत्वपूर्ण होने वाली है। योजनाबद्ध ढंग से सेवा केंद्रों का विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण न केवल सेवा वितरण को प्रभावी बनाएगा, बल्कि सामाजिक और आर्थिक विकास को भी तीव्र गति प्रदान करेगा।

संदर्भ सूचीः

1. Mishra, R.P. (1971). Regional Planning: Concepts, Techniques and Policies, University of Mysore, P-124

2- Rai, S. & Patil, B.S. (1977). “Identification of Service Centres in Rural India”, Geographical Review of India. P-87

3. वही

4. Bunnag, S. (1970). “Service Centres and Rural Development in India”, National Geographical Journal of India., P-67

5. कायस्थ, एस.डी. एवंमिश्रा, आर.पी. (1981). ग्रामीण सेवा केंद्रों के प्रकार्यीय विश्लेषण एवं विकास क्रम, विनीता प्रकाशन नई दिल्ली, पेज 108

6. वही

7. मिश्रा, पी. (2012). ‘’ग्रामीण योजना एवं विकास‘’, प्रयाग पुस्तक भवन, पेज 227

8.वही

9. सेवा केदो का बढ़ता दायरा, योजना मासिक पत्रिका, नवंबर 2019, पेज 46

10. भागलपुर जिला प्रशासन द्वारा जारी आंकड़ों का विश्लेषण 11. स्वयं द्वारा एकत्र किए गए आंकड़े